REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

विदेशों मे मेडिकल शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र/छात्राओं की समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन।

डॉ. ज़किया रफत
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष , समाजशास्त्र विभाग ,
आर.बी.डी. स्नात्कोत्तर महिला महाविद्यालय, बिजनौर.

सारांश :

भारतीय छात्र/छात्राओं का मेडिकल की शिक्षा ग्रहण करने के लिए विदेश जाने का क्रेज़ निरन्तर बढ़ रहा है। विश्व के सभी समाजों में डाक्टर के पेशे को बहुत ही प्रतिष्ठित माना जाता है। उसमें आदर व सम्मान के साथ–साथ अच्छा पैसा भी मिलता है। बायोलॉजी लेकर पढ़ने वाले छात्र/छात्राओं का यह स्वप्न होता है कि वे डाक्टर बनें। साथ ही कुछ माता–पिता भी अपने बच्चों को डॉक्टर बनने के लिए बहुत दबाव बनाते है। परन्तु हमारे देश में मेडिकल में प्रवेश प्रक्रिया बहुत ही कठिन है। इसके लिए पहले नीट की परीक्षा उत्तीर्ण करके मैरिट में उचित स्थान प्राप्त करना होता है। प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली इस परीक्षा में लाखों की संख्या में छात्र/छात्राऐं 2–2, 3–3 बार बैठने पर भी सफल नहीं होते अथवा मैरिट में स्थान नहीं ला पाते। तब वे विदेशों का रूख करते हैं जहां मैडिकल शिक्षा सस्ती और अच्छी है। वर्तमान में यूक्रेन, रशिया, चाइना, जार्जिया, रोमानिया, फिलीपींस, क्रिगिस्तान, बांग्लादेश व नेपाल आदि देशों में भारतीय छात्र/छात्राऐं मेडिकल की शिक्षा ग्रहण कर रहे है। इनके समक्ष उन देशों में अनेक समस्याएं आती है। प्रस्तुत शोध पत्र उनकी समस्याओं पर केन्द्रित है।

प्रस्तावना :

विदेश जाकर अध्ययन करने का चलन पूरी दुनिया में तेजी से बढ़ रहा है। हर साल लाखों की तादाद में भारतीय छात्र डिग्री हासिल करने के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों का रूख करते है। देश से विदेश जाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। यूनेस्को अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों को शिक्षा के उद्देश्य से एक राष्ट्र या क्षेत्र की सीमा पार करने वाले छात्रों के रूप में परिभाषित करता है जो अब मूल देश के बाहर के देशों में नामांकित है।[1] विदेश मंत्रालय की एक रिपोर्ट के मुताबिक, 7 अगस्त 2017 तक विश्व के 86 देशों में कुल 5,53,440 भारतीय छात्र शिक्षा हासिल कर रहे थे। यह आंकड़ा 28 दिसम्बर 2017 तक बढ़कर 5,86,183 तक पहुंच गया। आज भी सर्वाधिक छात्र 2,06,708 अमेरिका में 1,00,000 कनाड़ा में, 63,283 आस्ट्रेलिया में है।[2] इस प्रकार 55 प्रतिशत भारतीय छात्र उक्त तीन देशों में अध्ययन कर रहे है।[3] अब रोमानिया और यूक्रेन भी मेडिकल के क्षेत्र में भारतीय छात्रों के लिए एक गन्तव्य के रूप में उभरा है। क्योंकि यहां की शिक्षा प्रणाली यूरोपीय संघ के तहत विनियमित है और पूर्व यू0एस0एस0आर0 की तुलना में अधिक गुणवत्ता युक्त है।[4] वर्तमान में भारत के 8293 अन्तर्राष्ट्रीय छात्र यूक्रेन में मेडिकल शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। वर्ष 2017 में 4100 स्टडी वीजा इश्यू किये गये जो 2015 की तुलना में लगभग 2.7 गुना अधिक है।[5] गुजरात व राजस्थान के अनेक छात्र/छात्राएं फिलीपींस और बांग्लादेश भी मेडिकल की पढ़ाई कर रहे हैं।[6] इसके अतिरिक्त जॉर्जिया, नेपाल, क्रिगिस्तान आदि देशों में भी मेडिकल शिक्षा के लिए छात्र जा रहे है। इन देशों में अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों के समक्ष अनेक

समस्याएं आती हैं।[7] जिनका समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन किये जाने की महती आवश्यकता है।

अध्ययन के उददेश्य :

5. बिजनौर नगर के विदेशों में मेडिकल की शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र/छात्राओं की स्थिति ज्ञात करना।
2. विदेशों में अध्ययनरत् छात्र/छात्राओं की समस्याओं का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तुत अध्ययन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थित जनपद बिजनौर के बिजनौर नगर में सम्पन्न किया गया है।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत अध्ययन अन्वेषणात्मक तथा वर्णनात्मक शोध प्ररचना के अन्तर्गत किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु 36 इकाईयों का चयन स्नोबॉल निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है। चयनित इकाईयों से आंकड़ों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची द्वारा माह जुलाई व अगस्त 2018 में किया गया। जब वे इकाईयां दो माह की छुट्टियों में अपने घर (बिजनौर) आयी हुई थीं।

उपलब्धियां :

बिजनौर नगर के विदेशों में मेडिकल की शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र/छात्राओं की स्थिति :

तालिका : 1

क्र.सं.	देश	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	अमेरिका	2	5.5
2	जर्मनी	1	2.7
3	नेपाल	2	5.5
4	बांग्लादेश	3	8.4
5	मॉरीशस	1	2.7
6	रशिया	3	8.4
7	जॉर्जिया	4	11.1
8	अरमीनिया	2	5.5
9	क्रिगिस्तान	3	8.4
10	यूक्रेन	15	41.8
	कुल	**36**	**100**

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक इकाईयां 41.8 प्रतिशत मेडिकल शिक्षा यूक्रेन में ग्रहण कर रहे है। 11.1 प्रतिशत जॉर्जिया में, 8.4 प्रतिशत बांग्लादेश, 8.4 प्रतिशत रशिया, 8.4 प्रतिशत क्रिगिस्तान में मेडिकल की पढ़ाई कर रहे है। इसके अतिरिक्त 5.5 प्रतिशत अमेरिका, 5.5 प्रतिशत नेपाल, 5.5 प्रतिशत अरमीनिया में अध्ययनरत है। 2.7 प्रतिशत जर्मनी से तथा 2.7 प्रतिशत मॉरिशस से मेडिकल शिक्षा प्राप्त करने गये हैं।

उपर्युक्त तालिका के आंकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि बिजनौर से अधिकतर छात्र मेडिकल की शिक्षा प्राप्त करने के लिए यूक्रेन जाते हैं। सूचनादाताओं ने बताया कि यूक्रेन यूरोप में होने के कारण यूरोप में पढ़ाई का क्रेज़ उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा तथा कम फीस और यूरोप की डिग्री का आकर्षण उन्हें यूक्रेन में मेडिकल की पढ़ाई करने को प्रेरित करता है।

विदेशों में मेडिकल शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र/छात्राओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि

तालिका : 2

आयु	लिंग	माता–पिता की शिक्षा	पिता का व्यवसाय	पिता की आर्थिक स्थिति	परिवार का स्वरूप
18 – 20 8 (22.2%) 20 – 22 15 (41.7%) 22 – 24 9 (25.0%) 24 – 26 4 (11.1%)	छात्र 29 (80.6%) छात्राएं 7 (19.4%)	उच्च शिक्षित 6 (16.7%) मध्यम शिक्षित 10 (27.8%) अल्प शिक्षित 12 (33.3%) अशिक्षित 8 (22.2%)	डाक्टर /वकील 6 (16.7%) सरकारी/ प्राइवेट नौकरी 12 (33.3%) व्यापारी 15 (41.6%) विदेश में कार्यरत 3 (8.4%)	उच्च 3 (8.4%) उच्च मध्यम 12 (33.3%) मध्यम 14 (38.9%) निम्न मध्यम 7 (19.4%)	एकाकी 30 (83.3%) संयुक्त 6 (16.7%)
36 **(100%)**	**36** **(100%)**	**36** **(100%)**	**36** **(100%)**	**36** **(100%)**	**36** **(100%)**

तालिका 2 से इकाईयों की पारिवारिक पृष्ठभूमि देखने पर ज्ञात होता है कि 18 वर्ष से लेकर 26 वर्ष तक की कुल 36 इकाईयां विदेश में मेडिकल शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। सर्वाधिक 41.7 प्रतिशत की आयु 20 से 22 वर्ष के मध्य है। इकाईयों की लैंगिक स्थिति देखने पर पता चलता है कि विदेश में मेडिकल शिक्षा ग्रहण करने वालों में सर्वाधिक 80.5 प्रतिशत छात्र हैं जबकि 19.4 प्रतिशत छात्राएं हैं। अध्ययन के दौरान यह तथ्य भी सामने आये कि माता–पिता लड़कियों को मेडिकल शिक्षा ग्रहण करने के लिए विदेश नहीं भेजना चाहते और वे अगर तैयार भी हो जाएं तो उनके पास–पड़ौसी व रिश्तेदार उनका विरोध करते हैं।

इकाईयों के माता–पिता की शैक्षिक स्थिति के अवलोकन से स्पष्ट है कि केवल 16.7 प्रतिशत के माता–पिता उच्च शिक्षित हैं जबकि 27.8 प्रतिशत के मध्यम स्तर तक, 33.3 प्रतिशत के अल्प शिक्षित तथा 22.2 प्रतिशत के अशिक्षित हैं। उपरोक्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षितों की अपेक्षा मध्यम, अल्पशिक्षित व अशिक्षित माता–पिता की संताने विदेश में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। अध्ययन के दौरान यह भी पता चला कि विदेशी मेडिकल कालेजों में प्रवेश एजेन्सी करवाती हैं और यह अपने एजेण्ट विभिन्न शहरों में भेजती हैं। सेमिनार करवाती हैं। कोचिंग सैन्टर से भी छात्रों से सम्पर्क करती हैं। उच्च शिक्षितों की अपेक्षा अल्प शिक्षित व अशिक्षित माता–पिता इनके झांसों में आ जाते हैं और इनके माध्यम से विदेश भेज देते हैं।

इकाईयों के पिता की व्यवसायिक स्थिति के अवलोकन से पता चलता है कि 16.7 प्रतिशत के पिता डाक्टर/वकील, 33.3 प्रतिशत के पिता सरकारी या प्राइवेट नौकरी में, 41.6 प्रतिशत व्यापारी, 8.4 प्रतिशत के विदेश में कार्यरत है। 8.4 प्रतिशत इकाईयों के पिता की आर्थिक स्थिति उच्च, 33.3 प्रतिशत उच्च मध्यम, 38.9 प्रतिशत की मध्यम तथा 19.4 प्रतिशत की निम्न है।

अध्ययन के दौरान यह तथ्य भी प्रकाश में आया कि मध्यम तथा निम्न मध्यम आर्थिक स्थिति वाले छात्र/छात्राएं बैंक से एजुकेशन लोन लेकर मेडिकल शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त 83.3 प्रतिशत इकाईयाँ एकाकी परिवारों से तथा 16.7 प्रतिशत इकाईयां संयुक्त परिवार से सम्बद्ध है।

उपर्युक्त आंकड़ों के विश्लेषण से निष्कर्षित होता है विदेश जाने वाली सर्वाधिक इकाईयाँ एकाकी परिवारों से है। इन परिवारों में निर्णय माता पिता लेते हैं। उन पर रिश्तेदारों का दबाव नहीं होता। इसलिए वे संतानों को विदेश भेज देते है।

विदेशों में अध्ययनरत् मेडिकल छात्र/छात्राओं के समक्ष आने वाली समस्याएं

तालिका – 3

समस्याएं	इकाई संख्या		योग
	हाँ	नहीं	
भाषा	33 (91.7%)	03 (8.3%)	36 (100%)
अपार्टमेण्ट/हॉस्टल	25 (69.5%)	11 (30.5%)	36 (100%)
भोजन	29 (80.6%)	07 (19.4%)	36 (100%)
संस्कृति से सामंजस्य	36 (100%)	–	36 (100%)
जलवायु से सामंजस्य	30 (80.3 %)	06 (16.7%)	36 (100%)
प्रेरणा की कमी	18 (50%)	18 (50%)	36 (100%)
मोबाइल के सिग्नल न मिलना	26 (72.2%)	10 (27.8%)	36 (100%)
जातीय विभेदीकरण	26 (72.2%)	10 (27.8%)	36 (100%)
एजेण्ट्स की धोखाधड़ी	8 (22.2%)	28 (77.8%)	36 (100%)
आर्थिक समस्याएं	25 (69.5%)	11 (30.5%)	36 (100%)
अध्ययन सम्बन्धी	32 (88.9%)	4 (11.1%)	36 (100%)
एकाग्रता भंग करने वाले कारक	31 (86.2%)	5 (13.8%)	36 (100%)
स्वास्थ्य	11 (30.5%)	25 (69.5%)	36 (100%)

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विदेशों में मेडिकल शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं के सामने अनेक समस्याएं आती है।

भाषा

भाषा–91.7 प्रतिशत इकाईयों के सामने सबसे बड़ी समस्या उस देश की भाषा न आने के कारण आयी। जबकि 8.3 प्रतिशत इकाईयां जो अमेरिका तथा मॉरीशस में अध्ययन कर रही है उनके समक्ष यह समस्या नहीं आयी।

हॉस्टल

हॉस्टल की स्थिति देखने पर ज्ञात हुआ कि सर्वाधिक 69.5 प्रतिशत इकाईयों को हॉस्टल से सम्बन्धित समस्याएं आयी, जबकि 30.5 प्रतिशत इकाईयों को हॉस्टल सम्बन्धी समस्या नहीं आयी। हॉस्टल सम्बन्धी समस्या के विषय में छात्र/छात्राओं ने बताया, जो हॉस्टल यूनिवर्सिटी द्वारा उन्हें दिया गया वह अच्छा नहीं था। बांग्लादेश व नैपाल को छोड़कर अन्य देशों में छात्राओं के लिए कॉमन हॉस्टल हैं। भारतीय माता–पिता ने अपनी बेटियों को उक्त हॉस्टल में रखना नहीं पसन्द किया। अतः उन्होंने अलग से अपार्टमेण्ट में व्यवस्था की। अधिकतर लड़के भी एक वर्ष बाद अपार्टमेण्ट में शिफ्ट हो जाते हैं जिससे माता–पिता पर अधिक आर्थिक बोझ पड़ता है।

इसके अतिरिक्त अपार्टमेण्ट के मालिक भारतीय छात्र/छात्राओं को फ्लैट देना पसन्द नहीं करते। मालिकों का अनुभव है कि भारतीय फ्लैट को गंदा रखते है। इसलिए फ्लैट किराये पर मिलने में भी कठिनाई आती है।

भोजन सम्बन्धी समस्या

भोजन सम्बन्धी समस्या देखने पर पता चला कि 80.6 प्रतिशत छात्र/छात्राओं को समस्या आती है। 19.4 प्रतिशत को नहीं आयी।

अध्ययन के दौरान यह पता चला कि वहां जो भारतीय मेस होते है, वे भी छात्र–छात्राओं को पूर्ण आहार नहीं देते। अतः विद्यार्थी सेल्फ कुकिंग करते हैं।

संस्कृति के साथ सामंजस्य

विदेश में अध्ययन करने वाले सभी 100 प्रतिशत भारतीय छात्र/छात्राओं को अध्ययन वाले देश की संस्कृति तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों की संस्कृतियों के साथ सामंजस्य करने में समस्या आती है।

जलवायु सम्बन्धी समस्या

विदेश जाने वाले भारतीय छात्र–छात्राओं को जलवायु सम्बन्धी समस्या का भी सामना करना पड़ता है।

सर्वाधिक 83.3 प्रतिशत इकाईयों को जलवायु सम्बन्धी समस्या बहुत गंभीर रूप से आयी। इसमें वे छात्र/छात्राऐं जो अमेरिका, जर्मनी, जार्जिया, रशिया, अरमीनिया, क्रिगिस्तान, यूक्रेन में अध्ययनरत् है जहां का तापमान माइनस 30 डिग्री से0 तक चला जाता है।

जबकि 16.7 प्रतिशत इकाईयां (जो बांग्लादेश, नेपाल व मारीशस में अध्ययनरत है) को जलवायु से सामंजस्य की कोई समस्या नहीं आयी।

प्रेरणा की कमी

विदेश में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र/छात्राओं में 50 प्रतिशत का मानना है कि वहां कोई प्रेरित करने वाला नहीं है। घर में माता–पिता अध्ययन के लिए प्रेरित करते थे। अब सेल्फ स्टडी करनी पड़ती है। समय के साथ समायोजन न होने से कठिनाई आती है। जबकि 50 प्रतिशत इकाईयों को ऐसी कोई समस्या नहीं आयी। वे अपने अध्ययन के लिए स्व प्रेरित है।

घर से बहुत दूर विदेशों में अध्ययनरत् छात्र/छात्राओं को अपने हॉस्टल / अपार्टमेण्टस में जब मोबाइल के सिग्नल नहीं मिलते और वे माता पिता से वीडियो कान्फ्रेंसिंग नहीं कर पाते तब उन्हें बहुत बुरा लगता है। 72.2 प्रतिशत इकाईयों को सिग्नल न मिलने से समस्या आयी जबकि 27.8 प्रतिशत के सामने ऐसी समस्या नहीं आयी।

नसलीय – जातीय विभेदीकरण

विदेशों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं में से 72.2 प्रतिशत को नसलीय व जातीय आधार पर विभेदीकरण से भी समस्याएं आयीं जबकि 27.8 प्रतिशत को ऐसी समस्या नहीं आयी।

अध्ययन के दौरान छात्रों के बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय बैच में प्रत्येक देश के छात्र/छात्राएं अपना एक ग्रुप बना लेते है। वे दूसरे देश के विद्यार्थियों को उसमें एन्ट्री नहीं देते। इसके अतिरिक्त प्रोफेसर्स भी भारतीयों को हेय समझते है।

एजेण्ट्स की धोखाधड़ी

विदेश में अध्ययन के लिए गये छात्र/छात्राएं एजेण्ट्स की धोखाधड़ी का भी शिकार होती है। 22.2 प्रतिशत छात्र/छात्राएं को एजेण्ट ने धोखा दिया। उन्हें भारत से जिस यूनिवर्सिटी में प्रवेश दिलवाने की बात कही गयी थी । सम्बन्धित यूनिवर्सिटी में ले जाकर एक दो हफ्ते रखकर दूसरी यूनिवर्सिटी में भेज दिया गया। ऐजेण्ट्स एम.बी.बी.एस. प्रथम वर्ष के छात्र/छात्राओं की आधी फीस जमा करते हैं और आधी अपने पास रख लेते हैं। छात्र/छात्राओं को फीस की रसीद भी नहीं देते। 6 माह के बाद जब यूनिवर्सिटी उनको नोटिस जारी करती है तब वे परेशान होते है और घर से फीस मंगा कर जमा करते हैं । ऐसे ही हॉस्टल की पूरे वर्ष की फीस जमा हो जाती है। छात्र/छात्राओं को जब हॉस्टल पसन्द नहीं आता और वे वहां नहीं रहते तथा अपार्टमेण्ट ले लेते है तो हॉस्टल फीस वापस नहीं होती। प्रवेश करवाने में ही काफी पैसा प्रोसेसिंग फीस के नाम पर ले लेते हैं।

आर्थिक समस्याएं :

छात्र/छात्राओं को विदेशी मेडिकल यूनिवर्सिटी का जो वार्षिक खर्च एजेण्ट बताते हैं। विदेश जाकर रहने खाने का खर्च ही बहुत अधिक बैठता है तथा ठगी के कारण फीस हड़प जाने के कारण, माता–पिता पर दोहरी मार पड़ती है। डॉलर के मुकाबले रूपये की कीमत लगातार गिरने से भारतीय छात्रों की मुश्किलें बढ़ी है। 69.5 प्रतिशत इकाईयों के सामने आर्थिक समस्याएं आयी।

अध्ययन सम्बन्धी :

अध्ययन से सम्बन्धित समस्याएं भी आती है। प्रोफेसर्स का उच्चारण समझने में समय लगता है। 100 प्रतिशत उपस्थिति होने के कारण छात्र/छात्राओं को शनिवार व रविवार को भी छुट्टी नहीं मिलती। इन दोनों दिने वे अपनी एन.पी. क्लीयर करते है। मेडिकल के विषयों के अतिरिक्त उन देशों की भाषा, इतिहास आदि को भी पढ़ना पड़ता है। जिससे छात्रों पर पढ़ाई का अनावश्यक बोझ पड़ता है। 88.9 प्रतिशत इकाईयों के समक्ष यह समस्याएं आयी जबकि 11.1 प्रतिशत के सामने यह समस्या नहीं आयी।

एकाग्रता भंग करने वाले कारक :

छात्र/छात्राएं अमेरिका, जर्मनी, मॉरीशस, यूक्रेन, जार्जिया, अरमीनिया जैसे देशों में अध्ययन के लिए जाते हैं। वे उनकी संस्कृति से प्रभावित हो कर अनेक व्यसनों में पड़ जाते है। सिगरेट, शराब, लड़कियों से दोस्ती, हुक्का क्लब, पब, बीच्स पर घूमना आदि। इसका प्रभाव उनके अध्ययन पर पड़ता है। और वे अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं।

स्वास्थ्य सम्बन्धी :

30.5 प्रतिशत इकाईयां बीमार हो गयी तब उन्हें वहां की दवाई का असर नहीं हो रहा था। जबकि 69.5 प्रतिशत को ऐसी समस्या नहीं आयी।

संदर्भ :

1. International Students difinition – Migration Data Portal, Retrieved, August 16, 2018.
2. 'पढ़ाई के लिए विदेश जाना हो तो किस देश को दें' Quint Hindi, 29 June, 2018. http://hindi.the quint.com>world
3. Dube, Rakesh-Indian Students studing abroad in 86 different countries, 55% in USA & Canada 19 Aug. 2017
   http://factly.in>indians.students-study.in
4. http://en.m.wikipedia.org/.wik
5. Study in ukrain.gov.ua/2017/17.
6. दैनिक भास्कर, अगस्त 26, 2016, 9:35 A.m. IST.
7. http://www.bbc.com/hindi/in.
8. विदेश में पढ़ रहे भारतीय पर कुछ यूं पड़ रहा है डॉलर के मुकाबले रूपये की गिरावट का अससर, हिन्दुस्तान बुधवार, 19 सित0 2018, 17:18, IST
9. https://www.livehindustan.com